अध्याय - 04

मानव विकास

- मानव विकास
  - परिचय
  - वृद्धि और विकास से आशय
  - विकास की अवधारणा (concept of development)
  - मानव विकास के चार स्तंभ
    - समता
    - सतत् पोषणीयता
    - उत्पादकता
    - सशक्तिकरण
  - मानव विकास के चार स्तंभ
    - समता
    - सतत् पोषणीयता
    - उत्पादकता
    - सशक्तिकरण
  - मानव विकास के उपागम
    - आय उपागम
    - कल्याण उपागम
    - आधारभूत आवश्यकता उपागम
    - क्षमता उपागम
  - मानव विकास के आधारभूत सूचकांक
  - मानव विकास के मापन के तीन प्रमुख सूचकांक

© JCERT not to be republished

2. परिचय :

2.1 मानव विकास का तात्पर्य संपूर्ण मानव जाति का सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, कल्याण एवं हित से है।

2.2 संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के द्वारा 1990 में प्रकाशित पहली मानव विकास रिपोर्ट के अनुसार मानव विकास के अंतर्गत दीर्घ एवं स्वास्थ्य जीवन शिक्षा तथा उच्च जीवन स्तर का होना है।

3. वृद्धि और विकास से आशय:

3.1 वृद्धि तथा विकास का अलग-अलग अर्थ होता है लेकिन दोनों एक-दूसरे के साथ चलते हैं।

3.2 वृद्धि तथा विकास दोनों समय के संदर्भ में होने वाले परिवर्तनों को प्रदर्शित करते हैं ।

3.3 वृद्धि मात्रात्मक तथा मूल निरपेक्ष होता है तथा इसका परिणाम धनात्मक या ऋनात्मक दोनों प्रकार हो सकता है ।

3.4 लेकिन विकास गुणात्मक परिवर्तन तथा मूल्य सापेक्ष होता है ।

3.5 तथा गुणवत्ता में सकारात्मक परिवर्तन होता है। अतः विकास जब तक नहीं हो सकता तब तक वर्तमान दशाओं में धनात्मक परिवर्तन न हो।

3.6 उदाहरण: किसी निश्चित अवधि में यदि किसी नगर की जनसंख्या एक लाख से बढ़कर दो लाख हो जाती है तो जनसंख्या में वृद्धि समझा जाता है

3.7 लेकिन अगर नगर में हुई जनसंख्या वृद्धि के सापेक्ष में यदि मूलभूत सुविधाएं जैसे आवास सुविधाएं, अन्य सुविधाओं में वृद्धि नहीं होती है तो उस वृद्धि को विकासहीन वृद्धि कहा जाएगा।

4. विकास की अवधारणा (concept of development)

4.1 वर्ष 1990 में प्रथम बार पाकिस्तानी अर्थशास्त्री महबूब उल हक ने मानव विकास का निर्धारण करते हुए इस स्थित पर बल दिया गया कि विकास का संबंध लोगों के विकल्पों में बढ़ोतरी से है ताकि वह आत्मसम्मान के साथ दीर्घ एवं स्वास्थ्य जीवन व्यतीत कर सकें।

© JCERT not to be republished

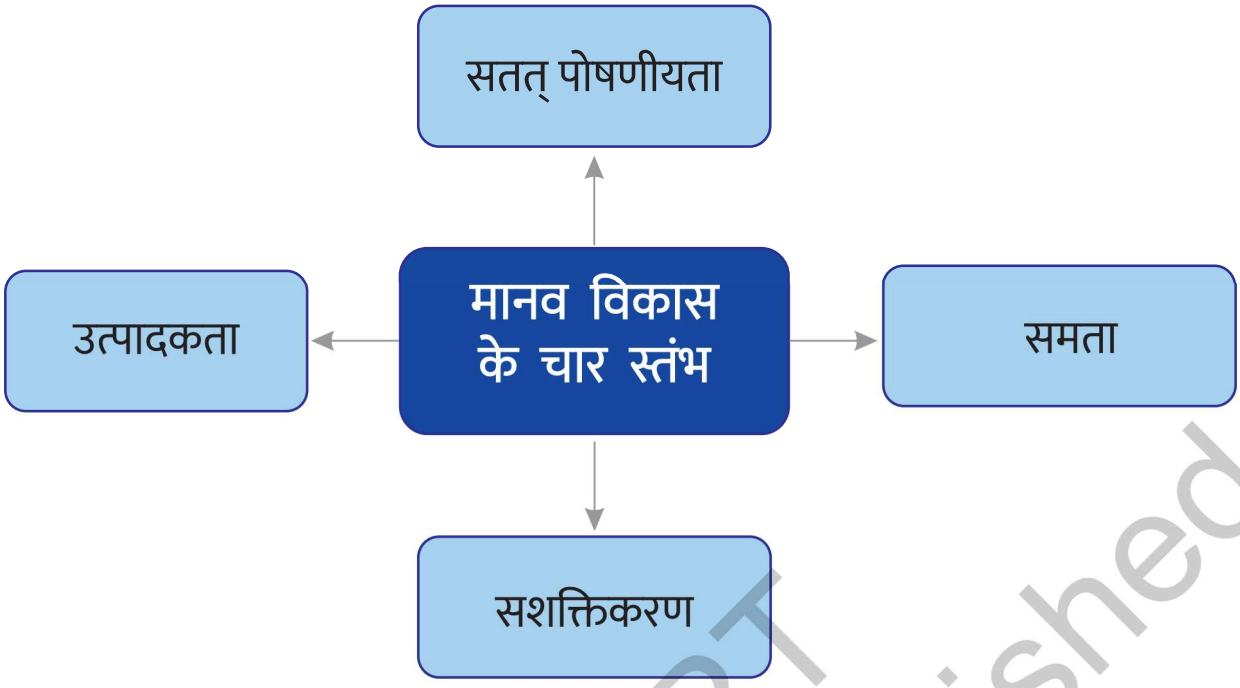

5. मानव विकास के चार स्तंभ

5.1 समता

5.2 सतत् पोषणीयता

5.3 उत्पादकता

5.4 सशक्तिकरण

5.1 समता

5.1.1 समता का शाब्दिक अर्थ समानता, बराबरी, या तुल्यता होता है । अतः किसी प्रदेश में उपलब्ध समस्त संसाधनों की वहां पर रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को समान रूप से उपलब्ध कराना है।

5.1.2 अर्थात् लोगों को उपलब्ध अवसर या संसाधन, लिंग, प्रजाति, आय तथा जाति के भेदभाव के विचार के बिना समान रूप से मिलने चाहिए ।

5.1.3 जैसे -शिक्षा का अधिकार भोजन आदि।

5.2 सतत् पोषणीय :

5.2.1 सतत् पोषणीयता का अर्थ अवसरों की उपलब्धि में निरंतरता है।

5.2.2 इसके अंतर्गत किसी क्षेत्र में क्षेत्र में उपलब्ध पर्यावरण, वित्तीय तथा मानवीय संसाधनों का उपयोग विवेकपूर्ण ढंग से करना

© JCERT not to be republished

5.2.3 ताकि इन संसाधनों की उपलब्ध भावी पीढ़ियां को समान रूप से मिल पाए।

5.2.4 वस्तुत: संसाधनों का दुरुपयोग भावी पीढ़ियों के लिए इन संसाधनों की उपलब्धता के अवसरों को सीमित कर मानव विकास में अवरोध बन सकता है।

5.3 उत्पादकता

5.3.1 किसी राष्ट्र की वास्तविक पूंजी मानव संसाधन होते हैं ।

5.3.2 लोगों को समर्थ और सक्षम बना कर मानव श्रम की उत्पादकता निरंतर बेहतर बनाए रखने के लिए लोगों के ज्ञान को बढ़ाने के प्रयास

5.3.3 तथा उन्हें बेहतर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराना है।

5.4 सशक्तिकरण:-

5.4.1 आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़े हुए लोगों को हर तरह से समर्थ बनाना ताकि वे अपने विकल्पों का चयन करने की शक्ति प्राप्त हो।

5.4.2 अतः लोगों को सशक्त करने के लिए देश में उत्तम शासन व्यवस्था तथा लोकोन्मुखी नीतियां हो।

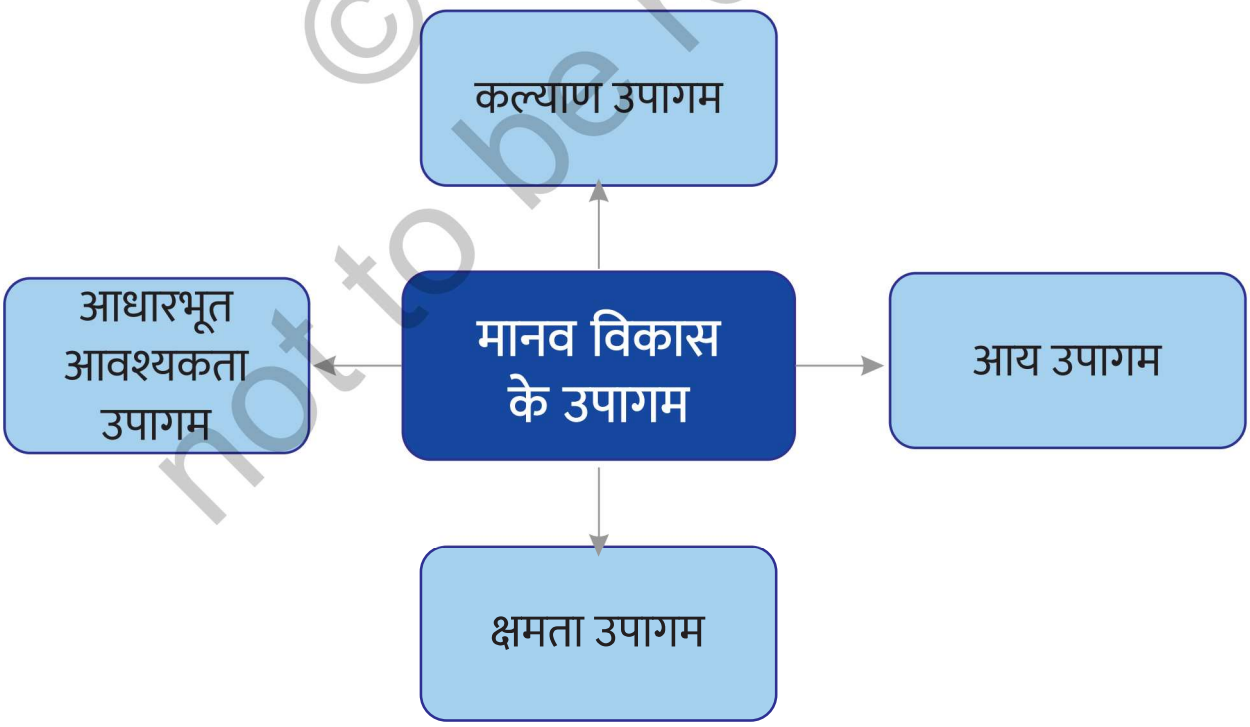

© JCERT not to be republished

6. मानव विकास के उपागम

मानव विकास के चार प्रमुख उपागम है।

6.1 आय उपागम:

6.1.1 यह मानव विकास के सबसे पुराने उपागम में से एक है इस उपागम के अंतर्गत अगर मानव का आय का स्तर भी ऊंचा होगा।

6.2 कल्याण उपागम :

6.2.1 सरकार कल्याण पर अधिकतम व्यय करके मानव विकास के स्तरों में वृद्धि करने के लिए जिम्मेदार है ।

6.2.2 जैसे प्रत्येक मानव की शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षा तथा सुख सुविधाओं पर पर्याप्त धनराशि के सरकारी व्यय को आवश्यक समझा जाता है ।

6.2.3 सरकार का यह उत्तरदायित्व है कि मानवीय कल्याण पर ज्यादा खर्च करके मानव विकास के स्तरों को वृद्धि करें।

6.3 आधारभूत आवश्यकता उपागम:-

6.3.1 स्वास्थ्य, शिक्षा, भोजन, जलापूर्ति, स्वच्छता तथा आवास जैसी मुख्य रूप छः निम्न आधारभूत आवश्यकताओं की समुचित व्यवस्था के उच्चीकरण पर बल दिया गया।

6.3.2 उपागम का प्रतिपादन अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (I.L.O) ने किया है।

6.4 क्षमता उपागम :-

6.4.1 भारतीय अर्थशास्त्री प्रोफेसर अमर्त्य सेन द्वारा प्रतिपादित इस उपागम के अंतर्गत संसाधनों की पहुंच के लिए मानव क्षमताओं का निर्माण करना है तथा इससे मानव विकास की कूंजी कहा गया है।

7. मानव विकास के आधारभूत सूचकांक:-

7.1 मानव विकास सूचकांक, मापक है जिसके तहत् संसाधनों तक पहुंच के संदर्भ में किसी देश के लोगों के विकास का मापन किया जाता है ।

7.2 सूचकांक 0-1 के बीच स्कोर के आधार पर होता है।

8. मानव विकास के मापन के तीन प्रमुख सूचकांक:-

8 .1 स्वास्थ्य

8.1.1 जीवन प्रत्याशा (life Expectancy at Birth) के आधार पर स्वास्थ्य का मूल्यांकन किया जाता है।

© JCERT not to be republished

8.1.2 जीवन प्रत्याशा जो वर्षों के रूप में नापी जाती है इसके तहत 25 से 85 वर्ष को लिया जाता है

8.1.3 इसमें जितनी ही उच्च जीवन प्रत्याशा होगी उतना ही अधिक विकास सूचकांक होगा।

8.1.4 शिशु मृत्यु दर, मात्तृ प्रसवोत्तर दर, वृद्धि आयु वर्ग के व्यक्तियों के उत्तम स्वास्थ्य सेवाएं व्यक्तियों की सुरक्षा तथा पर्याप्त भोजन सम्मिलित है।

8.2. साक्षरता

8.2 मनुष्य की ज्ञान तक पहुंच को प्रदर्शित करने के लिए प्रौढ़ साक्षरता दर तथा विद्यालयों में सकल नामांकित बच्चों की संख्या को आधार माना गया है।

8.3. संसाधनों तक पहुंच

8.3.1 यह आर्थिक सामर्थ्य का सूचक है यानि लोगों की क्रय शक्ति को दिखाता है जो उत्तम ढंग जीवन जीने के लिए साधनों की प्राप्ति से है। इससे राष्ट्रीय आय प्रति व्यक्ति आय या मानव की क्रय शक्ति के आधार पर है।

9. मानव विकास सूचकांक के आधार पर देशों का वर्गीकरण

संयुक्त राष्ट्र विकास योजना द्वारा मानव विकास प्रतिवेदन 1990 ई से प्रति वर्ष प्रकाशित कर रहा है

मानव विकास स्कूल के आधार पर देशों को 4 समूहों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

A. उच्चतम मानव विकास श्रेणी :- वैसे देश जिनका HDI मूल्य 0.800 से 1.000 होता है।

B. उच्च मानव विकास श्रेणी :- जिनका मूल्य HDI मूल्य 0.700 से 0.799 होता है।

C. मध्यम मानव विकास श्रेणी :-इसमें वैसे देशों को सम्मिलित किए जाते हैं जिनका HDI मूल्य 0.550 से 0.699 होता है।

D. निम्न मानव विकास श्रेणी:- जिनका HDI मान 0.350 तक होता है।

10. जिन देशों की सरकार वहां के लोगों पर शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे सामाजिक खंड में उच्चतर निवेश हुआ है वहां पर उच्च मानव विकास की श्रेणी पाई जाती है। जैसे यूरोप।

© JCERT not to be republished

11. मानव विकास के मध्यम स्तर वाले देशों का वर्ग ज्यादा है । इस श्रेणी के देशों का विकास द्वितीय विश्व युद्ध के बाद हुआ है क्योंकि इससे पहले यह देश उपनिवेश थे। अब अनेक देश अधिक लोकोन्मुखी नीतियों को अपनाकर तथा सामाजिक भेदभाव को दूर करके तेजी से मानव विकास स्कोर में सुधार कर रहे हैं।

12 मानव विकास के निम्न स्तरों में वैसे देश आते हैं जो राजनीतिक उपद्रव, गृहयुद्ध के रूप में सामाजिक अस्थिरता, अकाल अथवा बीमारियों की अधिक घटनाओं के दौर से गुजर रहे हैं। अतः इन देशों में मानव विकास की नीतियां को प्राथमिकता देना आवश्यक है।

© JCERT not to be republished

अभ्यास

1. नीचे दिए गए चार विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए :

(i) निम्नलिखित में से कौन - सा विकास का सर्वोत्तम वर्णन करता है ।

(क) आकार में वृद्धि

(ख) गुण में धनात्मक परिवर्तन

(ग) आकार में स्थिरता

(घ) गुण में साधारण परिवर्तन

(ii) मानव विकास की अवधारणा निम्नलिखित में से किस विद्वान की देन है ।

(क) प्रो . अमर्त्य सेन

(ख) डॉ. महबूब - उल - हक

(ग) एलन सी. सेम्पुल

(घ) रैटजेल

2.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 30 शब्दों में दीजिए :

(i) मानव विकास के तीन मूलभूत क्षेत्र कौन - से हैं ?

(ii) मानव विकास के चार प्रमुख घटकों के नाम लिखिए ।

(iii) मानव विकास सूचकांक के आधार पर देशों का वर्गीकरण किस प्रकार किया जाता है ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 150 शब्दों से अधिक में न दीजिए :

(i) मानव विकास शब्द आपका क्या अभिप्राय है ?

(ii) मानव विकास अवधारणा के अंतर्गत समता और सतत् पोषणीयता से आप क्या समझते हैं ?

परियोजना क्रियाकलाप

10 सर्वाधिक भ्रष्ट तथा 10 सबसे कम भ्रष्ट देशों की सूची बनाइए । मानव विकास सूचकांक में उनके स्कोरों की तुलना कीजिए । आप क्या निष्कर्ष निकाल सकते हैं ? इसके लिए नवीनतम मानव विकास प्रतिवेदन से परामर्श लीजिए ।

© JCERT not to be republished